गौतम बुद्ध महाविद्यालय

सम्बद्ध-सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर

पचपेड़वा, सांगठ, संतकबीर नगर (उ.प्र.)

(शिक्षा संकाय)

विषय वस्तु विश्लेषण

सत्र : 20.24.-20..25.

छात्राध्यापक/छात्राध्यापिका का नाम पूजा सिंह

शिक्षण विषय विषय वस्तु विश्लेषण

महाविद्यालय अनुक्रमांक

विषय वस्तु विश्लेषण

(Content Analysis)

विषय वस्तु विश्लेषण वह प्रक्रिया है जिसमें शिक्षक किसी भी विषय वस्तु का सम्पूर्ण अध्ययन कर सभी, तथ्यों व विचारों का तार्किक क्रम में व्यवस्थित करता है। इस विश्लेषण प्रक्रिया में यह आवश्यक है कि विद्यार्थी शिक्षक छात्र/छात्राओं का स्तर उनकी शैक्षिक पृष्ठभूमि, उसकी ज्ञानार्जन की गति, स्वयं की शिक्षण क्षमताओं व उपलब्ध शिक्षण संसाधनों को भी दृष्टिगत रखे। विषय वस्तु विश्लेषण के पश्चात एक शिक्षक के लिए यह सरल हो जाता है कि उसे किन मुख्य बिन्दुओं को अपने पाठ प्रस्तुतीकरण के आधार में रखना है। विषय वस्तु विश्लेषण से यह भी सुनिश्चित हो जाता है कि विश्लेषित विषयवस्तु को किस प्रकार किस क्रम से तथा किस व्यवस्था से पढ़ाना है।

किसी विषय वस्तु के सबसे छोटे घटक में शब्द भी हो सकते हैं, विषय वस्तु की थीम, वर्णित पद्य अवधारणा, गद्यांश, भाषागत संरचना, रोचकता आदि सभी बिंदु हो सकते हैं। विषय वस्तु का मुख्य उद्देश्य विषय वस्तु को सरल बनाना है। तथा विषय वस्तु से जुड़े तथ्यों में सम्पूर्णता एवं क्रमबद्धता लाना है।

~~विषय~~ - वस्तु विश्लेषण

(Content Analysis)

आई० के० डेवीज ने अपनी पुस्तक Meaning of hearing में पाठ्य - वस्तु विश्लेषण का उल्लेख किया है।

"पाठ्य - वस्तु विश्लेषण के अंतर्गत पाठ्य वस्तु को उसके अवयवो तथा तत्वों में विश्लेषण तर्कपूर्ण विधि से किया जाता है तथा उसका तार्किक विधि से ही संश्लेषण भी किया जाता है।"

मैगार तथा मिलर ने सबसे पहले 1962 में उद्देश्यों को व्यवहारिक रूप से लिखने की विधि का विकास किया।

ग्लेयर ने सन् 1963 में और मेकनर ने सन् 1965 में पाठ्य - वस्तु विश्लेषण की विधियो का विकास किया। इन सभी में डेवीज की विधि अधिक उपयोगी मानी जाती है।

: प्रस्तावना :

विद्यालय में सम्मिलित किसी भी विषय में निर्धारित पाठ्य क्रमों में एक प्रकार से विषय - वस्तु तथा अधिगम अनुभव के रूझान देने का प्रयास किया जाता है। जिसके कारण शिक्षक अधिगम उद्देश्यों की पूर्ति में पूर्ण रूप से सहायता कर सके।

पाठ्यक्रम में सम्मलित विषय विशेष की यह विशेष सामग्री प्राय: निम्न रूपो में आयोजित या सग्रहीत की जाती है। बड़े तथा लघु रूपो में या विभागों के सम्प्रत्यय में इकाइयों प्रकरणों तथा सफल सम्प्रत्यय के रूप में शामिल किया जाता है।

इसी प्रकार किसी इकाई प्रकरण विशेष को पढाने के लिए अध्यापक अपनी सुविधा हेतु इसके अवयव अर्थात उपकरणों या सफल सम्प्रत्यय के रूप में क्रमिक रूप से व्यवस्थित एवं संगठित करते है। प्रकरण की विषय - वस्तु को विश्लेषण कहा जाता है।

पाठ्य - वस्तु विश्लेषण के स्त्रोत

(Content Analysis of Source)

पाठ्य - वस्तु विश्लेषण के लिए शिक्षक को अनेक स्त्रोतो का प्रयोग करना चाहिए ताकि वह पाठ्य - वस्तु को पूर्ण रूप से प्रस्तुत कर सकता है। यह एक सृजनात्मक कार्य माना जाता है। पाठ्य वस्तु के प्रकरण में निहित तर्क तथा अनुक्रियाओं को तभी कर सकता है जब उसे पाठ्य वस्तु विश्लेषण के स्त्रोत का प्रयोग करना आता हो। शिक्षक को पाठ्यवस्तु के प्रकरण पर स्वामित्व प्रदान या प्राप्त करना आवश्यक है।

पाठ्य - वस्तु विश्लेषण के निम्न स्त्रोत है :—

- प्राथमिक पाठ्य - वस्तुओं का अध्ययन
- छात्रो की आवश्यकताओं का ध्यान
- शैक्षिक आवश्यकताओं पर भी ध्यान देना
- परिक्षा प्रणाली के स्वरूप को समझना
- शिक्षक को अपने कौशलों को भी ध्यान में रखना चाहिए।
- छात्रो के स्तर पर भी ध्यान देना।
- शिक्षण सामग्री पर ध्यान देना।

प्रमाणिक पाठ्य पुस्तकें
Standard Books

सम्बन्धित पाठ्य वस्तु सामग्री
(Relatid Content Materials)

शैक्षिक आवश्यकता
Educational needs

शिक्षक
(Teachers)

पाठ्य-वस्तु विश्लेषण के स्त्रोत
(Sources of Content Analysis)

छात्रो की आवश्यकतायें
(Students Needs)

प्रश्न-पत्र तथा परीक्षा प्रणाली
(Question Papers And Examination System)

शिक्षण-सहायक सामग्री
(Teaching Aids)

पाठ्य - वस्तु विश्लेषण

शिक्षण अधिगम व्यवस्था के नियोजन में शिक्षक का कार्य पाठ्य - वस्तु का विश्लेषण करके शिक्षण के उद्देश्यों का प्रतिपादन करके उन्हें व्यवहारिक रूप से परिभाषित करना है इस सन्दर्भ में शिक्षक को तीन क्रियाएँ करनी पड़ती हैं।

1. कार्य विश्लेषण करना।
2. शिक्षण के उद्देश्यों को पहचानना
3. शिक्षण के उद्देश्यों को सीजना

शिक्षण तथा प्रशिक्षण कार्यक्रमों के विकास के कार्य को वास्तविक प्रकृति का विश्लेषण किया जाता है। यह कार्य शैक्षणिक तथा बौद्धिक प्रकृति का होता है। कार्य विश्लेषण में विश्लेषण तथा संश्लेषण दोनों सम्मिलित होते हैं।

कार्य संश्लेषण की + विशेषतायें हैं —

1. शिक्षार्थी के अधिगम की क्रियाओं का क्रमबद्ध रूप से व्यवस्था किया जाता है।
2. अपेक्षित उद्देश्यों को व्यवहारिक रूप में लिखा जाता है।
3. उन सभी उद्दीपन तथा परिस्थितियों को निर्धारित किया जाता है जिनके द्वारा छात्रों में अपेक्षित व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है। जा सकता है।

5. कार्य विश्लेषण की सहायता से उद्देश्यों, शिक्षा युक्तियों तथा आव्यूह के सम्बन्ध में निर्णय लिया जाता है।

सरल शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि जिस प्रक्रिया में अध्यापक द्वारा की जाने वाली विषय वस्तु के तत्वों एवं अंगों का चिन्तन, अध्ययन, नियोजन और तर्कपूर्ण ढंग से विचार विमर्श किया जाता है। इसे ही पाठ्य वस्तु एवं विषय वस्तु विश्लेषण कहते हैं।

पाठ्य वस्तु विश्लेषण या विषय वस्तु विश्लेषण की अनेक विधियाँ प्रचलित हैं —

- डेवीज विधि (1962)
- ग्लेसर विधि (1963)
- मेकनर विधि (1965)

इसमें डेवीज की विधि (1962) सर्वाधिक, सरल, स्पष्ट तथा उपयोगी मानी जाती है। डेवीज पाठ्य-वस्तु विश्लेषण विधि को मैट्रिक्स प्रविधि (Matrix Technique) कहा जाता है।

मैट्रिक्स प्रविधि के चरण (Steps of Matrix Technique)

प्रथम चरण (First Step) :— सम्पूर्ण पाठ्य - वस्तु को अनेक प्रकरणों में बाँटा जाता है।

द्वितीय चरण (Second Step) :— प्रत्येक प्रकरण को अनेक तत्वों में विभाजित किया जाता है।

तृतीय चरण (Third Step) :- प्रत्येक प्रकरण के ~~चरण~~ को तत्वों को एक निश्चित क्रम में व्यवस्थित किया जाता है।

इस प्रकार इस विधि में विश्लेषण एवं संश्लेषण दोनों ही प्रकार की प्रविधियाँ अपनायी जाती हैं।

डेवेजी पाठ्य - वस्तु विश्लेषण विधि (1962)

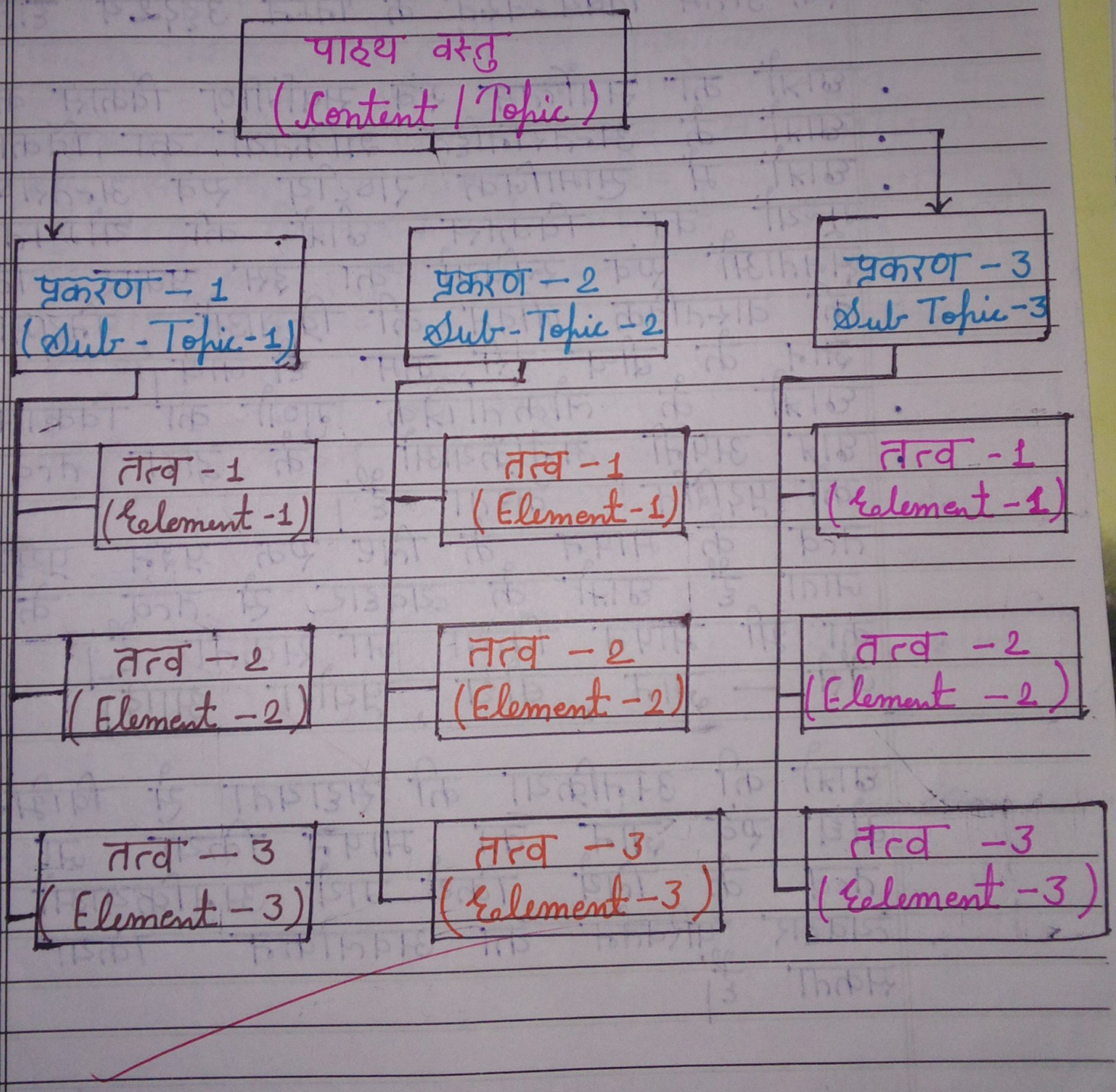

विषय वस्तु विश्लेषण के उद्देश्य

एक उत्तम विषय-वस्तु के निम्न उद्देश्य होते हैं।-

- छात्रों का सर्वोत्तम एवं सर्वांगीण विकास करना।
- छात्रों के अन्तरनिहित शक्तियों का विकास।
- छात्रों में सामाजिक राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय मूल्यों का विकास, छात्रों की योग्यताओं, क्षमताओं एवं रूचियों का इस प्रकार विकास की वास्तविक जीवन की क्रियाओं, नियमों व ज्ञान के बीच दूरी कम हो जाये।
- छात्रों के लोकतांत्रिक गुणों का विकास।
- छात्र अपनी अनुक्रियाओं के द्वारा तत्व ज्ञान को प्रदर्शित करता है।

तत्व के मापन के लिए एक प्रश्न प्रयुक्त किया जाता है। छात्रों के व्यवहार से तत्व के स्तर का भी मापन किया जा सकता है।
जैसे — ज्ञान, बोध, प्रयोग आदि।

छात्रो की अनुक्रिया की सहायता से विभिन्न बोध एवं ज्ञान का मापन किया जा सकता है। तत्व के लिये किये गये अनुक्रियाओं से व्यवहार परिवर्तन का अवलोकन किया जा सकता है।

पाठ्य वस्तु तत्वों की क्रमबद्ध व्यवस्था

शिक्षक प्रकरण को तत्वों में विभाजित करता है। जिससे छात्रों को सीखने में सुगमता हो सके। तत्वों का तार्किक क्रम मनोवैज्ञानिक रूप से भी वैध होना चाहिए। पाठ्यवस्तु विश्लेषण के पश्चात उसके तत्वों को क्रमबद्ध रूप से व्यवस्थित करने के नियम निम्न हैं।

1. ज्ञात से अज्ञात की ओर
2. सरल से कठिन की ओर

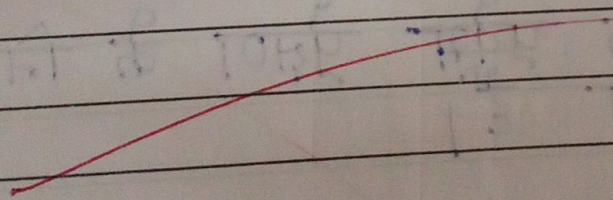

विषय वस्तु की आवश्यकता :-

- इसके द्वारा पाठ्य - वस्तु का स्वरूप निश्चित होता है, जिससे प्रस्तुतीकरण व अनुदेशन में सहायता मिलती है।
- अनुदेशन तथा शिक्षण के लिए युक्तियों तथा नीतियों में सहायता मिलती है।
- शिक्षण अधिगम क्रियाओं में समन्वय स्थापित करना एवं सहायक सामग्री के निर्माण में सहायता होती है।
- विषय - वस्तु विश्लेषण छात्रों के मूल्यांकन हेतु परिक्षा निर्माण में सहायक होती है।
- शिक्षण कौशलो के प्रवेश प्रेक्षण के निम्न प्रभावशाली आधार प्राप्त होता है।
- शिक्षण उद्देश्यों को सुगमता - पूर्वक प्राप्त किया जा सकता है।
- शिक्षण प्रक्रिया में महत्वपूर्ण प्रयत्नो के चुनाव में मदद मिलती है।
- शिक्षण प्रक्रिया को स्पष्ट एवं निश्चित स्वरूप प्रदान करना।

परिक्षा को विषय - वस्तु सम्बन्धी वैधता बनाये रखने की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

विषय- वस्तु या पाठ्य वस्तु विश्लेषण यह जानने के लिए किया जाता है कि यह विषय के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए पर्याप्त है।

शिक्षण बिन्दुओं को निर्धारित करने की विधि

शिक्षण बिन्दुओं का निर्धारित उद्देश्य व आकार होता है। इसलिए उद्देश्यों के अनुरूप ही पाठ्यवस्तु या विषय-वस्तु का विश्लेषण करना चाहिए। इसके लिए महत्वपूर्ण पाठ्यक्रम को उद्देश्य के अनुरूप विभक्त कर लेना चाहिए। इसके लिए विषय-वस्तु को प्रतिदिन के दृष्टिकोणों के कालांशों में विभक्त कर लेना चाहिए।

यह इस पर निर्भर करता है कि अध्यापक के पास इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए कितना समय है। लेकिन शिक्षण में उस प्रकार समस्त पाठ्यक्रम को एक साथ करके विश्लेषित करना सम्भव नहीं होता। प्रायः सभी पाठ्यक्रम में विषय-वस्तु कुछ प्रकरण के आधार पर विभाजित होता है। अध्यापक के लिए यह अधिक सुविधाजनक होता है कि यह वह उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक प्रकरण को विश्लेषित कर ले।

रिपोर्टिंग

मैं पूजा सिंह गौतम बुद्ध महाविद्यालय पचपेड़वा (सांगठ) सन्तकबीर नगर (U.P) में बी० एड० द्वितीय वर्ष की छात्रा हूँ। मेरा शिक्षण विषय जीव-विज्ञान तथा भौतिक विज्ञान है। मैं और मेरे सहपाठी बी०एड० के छात्राध्यापिकाओं को शिक्षण अभ्यास के लिए आदर्श जनता इण्टर कॉलेज में शिक्षण किये।

वहाँ सभी को उनके विषयानुसार कक्षायें दी गयी तथा शिक्षण के लिए कहा गया। किसी भी कक्षा में पढ़ाने के पूर्व शिक्षक के पास पाठ योजना होनी चाहिए। शिक्षक के पास पाठ योजना होने से ही वह शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावशाली बना सकता है।

मैंने भी शिक्षण से पहले यहाँ अपने विषय की पाठ योजना तैयार की जिससे मेरा शिक्षण सफल तथा प्रभावी हो सका।

पाठ योजना बनाने से के पूर्व हमें विषय-वस्तु का विश्लेषण करना चाहिए। मैंने भी अपने विषय की पाठ योजना बनाने के ~~लिए~~ से पहले उसको विस्तृत रूप में विश्लेषण किया। तत्पश्चात पाठ योजना बनायी।

पाठ्यवस्तु के विश्लेषण के बाद हमसे अध्यापको द्वारा बनायी गयी हरबर्ट की पंचपदीय योजना के अनुसार पाठ योजना तैयार किया गया।

इसका विवरण निम्न है :—

1. पाठ योजना की क्रम संख्या
2. विद्यालय का नाम
3. छात्राध्यापिका का नाम
4. दिनाँक
5. कक्षा
6. वर्ग
7. विषय
8. उप - विषय
9. चक्र
10. अवधि
11. प्रकरण
12. उद्देश्य
13. प्रकरण उद्देश्य
14. विशिष्ट उद्देश्य
15. सहायक सामग्री
16. पूर्व ज्ञान
17. प्रस्तावना
18. उद्देश्य कथन
19. प्रस्तुतिकरण
20. विकासात्मक प्रश्न
21. बोध प्रश्न
22. श्यामपट्ट सार
23. पुनरावृत्ति एवं मूल्यांकन प्रश्न
24. गृह कार्य